ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 648-650
www.allresearchjournal.com
Received: 22-01-2016
Accepted: 23-02-2016

Dr. Pardeep Singh Dehal
Asstt. Professor Department of ICDEOL HPU Shimla

Correspondence
Dr. Pardeep Singh
Asstt. Professor Department of ICDEOL HPU Shimla

भारत के प्रमुख शिक्षा–शस्त्रियों के शैक्षणिक–विधियों सम्बन्धी विचार तथा वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में उनके योगदान का अध्ययन

Dr. Pardeep Singh Dehal

सार
प्रस्तुत लघु शोध का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द एंव रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक उपागम विचार एंव वर्तमान समाज में उनकी प्रांसगिकता को उजागर करना है। मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी है और जन्म से ही वह अपने आस–पास के प्रेरणाओं और अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करता है। भारतीय दार्शनिकों ने शिक्षा को मुक्ति का साधन माना है तभी भारत ''विश्वगुरू'' की उपाधि से विभूषित हुआ। महापुरूषों का जीवन उस संगीत के समान है जिसके समाप्त होने पर भी उसकी धुन गूँजती रहती है। यद्यपि मृत्यु उन्हें इस संसार से छीन लेती है, समय का आवरण उन्हें हमसे ओझल कर देता है, उनके विचार,उनके कार्य जो उनके वचन और कर्म में व्यक्त हुए तथा जिन्हें समय चक्र नष्ट नहीं कर सका तथा जो राष्ट्र के जीवन दर्शन का अभिन्न अगं बन कर समस्त मानवता को प्रभावित करते है। शोद्यार्थी ने लघु शोध को पूर्ण करने के लिए सर्वमान्य दार्शनिक एंव ऐतिहासिक शोध विधि ही उपयोग में लाई है।

खोजशब्द : शिक्षा–शस्त्रियों, शैक्षणिक–विधियों, वर्तमान शिक्षा

प्रस्तावना
भारत की इस पावन धरती पर ऐसे अनेाकों शिक्षा शास्त्रियों ने जन्म लिया है जिनकी प्रतीभा को शब्दों की संकुचित सीमा में नहीं बाँधा जा सकता, इन्होनें भारतीय शिक्षा पद्धति देश में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी अपनाई जा रही है तथा इनका जीवन दर्शन समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। सम्पूर्ण मानव जाति को एक सुत्र में बांधने की शिक्षा प्रदान करने वालों दार्शनिक स्वामी विवेकानन्द तथा रविन्द्रनाथ टैगोर आध्यातमवाद, सर्वभौमवाद और मानवतावाद के समर्थक थे। इतिहास एक विस्मयकारी विषय है तथा महापुरूषों की जीवनी एक और भी एक आश्चर्यजनक विषय है जो बतलाती है कि उन महान हस्तियों ने इतिहास की रूपरेखा को किस प्रकार मोड़ दिया है और अपना एक स्थाई स्थान उस व्यवस्था में बनाया है। इन शिक्षा शास्त्रियों ने अपनी शिक्षण–विधियों द्धारा सम्पूर्ण शिक्षा जगत में परिवर्तन ला दिया और आज हम उनके द्धारा सुझाए गए सिद्धान्तों को अपने समाज–परिवेश तथा जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। अतः यह परम आवश्यक है कि इनके महत्वपूर्ण शैक्षिक विचारों का विश्लेषण किया जाए और इन्हें अपनी शिक्षा व्यवस्था में समाहित कर उसे समानुकूल बनाया जाए। साथ ही शिक्षा आयोग (1964–66) के इस विचार ''भारत का भाग्य निर्माण इस समय उनके अध्ययन कक्षों में हो रहा है।'' को चरितार्थ किया जाए। यद्यपि यह सब कर पाना आसान नहीं है। किन्तु यदि पूर्ण संकल्प और दृढ़, इच्छा शक्ति के साथ प्रयास किया जाए तो हम अवश्य सफल होंगे और राष्ट्र को अंधियारे पथ से निकालकर ज्योतिर्मय पद पर ले जाने में समर्थ होंगे।

शोध के उद्देश्य
1. भारत के प्रमुख शिक्षा–शास्त्रियों का शैक्षिक जगत में महत्वपूर्ण योगदान का अध्ययन।
2. भारत के प्रमुख शिक्षा–शास्त्रियों के शिक्षण–विधियों सबंधी विचारों तथा उनका वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान।

शोध विधि
शोधकर्ता ने इस शोध को सम्पूर्ण करने में सर्वमान्य ऐतिहासिक एंव दार्शनिक शोध विधि ही उपयोग में लाई है। इस विधि का उद्देश्य अतित की घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना नहीं बल्कि उनके जीवन भर के विचार–धाराओं के क्रमिक विकास का विश्लेषण करना है, जो कि इतिहास के विभिन्न कालों में उदित एंव विकसित हुए हैं।

समस्या का सीमांकन

1. प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन स्वामी विवेकानन्द जी एंव रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षणिक विधियों सम्बन्धी विचारों तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उनके योगदान पर केन्द्रित होगा।
2. यह अध्ययन केवल प्राथमिक तथा गौण दोनें स्त्रोतों से संग्रहित सूचनाओं पर आधारित होगा।

5. प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षण–विधियों सम्बन्धी विचारों एवं उनके योगदान का अध्ययन

5.1) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार

यद्यपि स्वामी जी ने अंग्रजी शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने अपने अन्दर आध्यात्मिक चेतना की जागृति की थी उसका आधार एकान्त चिन्तन, ध्यान और योग था। इसलिए उन्होनें उत्तम सीखने के लिए निम्नलिखित विधियों पर बल दिया हैः–

1. **केन्द्रीययकरण विधि द्वाराः** उनके अनुसार ज्ञान की प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है और वह है 'एकाग्रता'। शैक्षिक उपलब्धियाँ एकाग्रता मात्र पर निर्भर करती है। एकाग्रता जितनी अधिक होगी ज्ञान भी उतना ही अधिक प्राप्त होगा। मनुष्य और पशु में भेद ही एकाग्रता को लेकर है। कला संगीत आदि में कुशलता का आधार ही एकाग्रता है। एकाग्रता ऐसा साधन या यन्त्र है जिसकी पूर्णता प्राप्त हो जाने पर बालक इच्छानुसार अनेक विषयों का संग्रह कर सकता है।
2. **योग विधि द्वाराः** बह्मचार्य से बौद्धिक एंव आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। वासनाओं को वश में करना चाहिए। काम शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति में रूपान्तरित कर देना चाहिए।
3. **व्यक्तिगत निर्देशन एंव परामर्श विधि द्वाराः** सीखने में स्वाभविकत का महत्व है अतः बालक में ज्ञान को ठूँसना नहीं चाहिए। उसे पर्याप्त स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए। शिक्षा का वह माध्यम है जिसकी सहायता से हम मानव को किसी विशेष दिशा में ले जा सकते है।
4. **अनुकरण विधि द्वाराः** शिक्षकों को बालक के सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए जिसका अनुसरण कर वे उत्तम आचरण की शिक्षा प्राप्त कर सके।
5. **तर्क, व्याख्यान, विचार–विमर्श एंव उपदेश विधि द्वाराः** उनके कथानुसार जन्म भर पुस्तकों के द्वारा जो जानकारी प्राप्त हो सकती है उसे सौ गुणा अधिक कानों के द्वारा सिखाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उन्होनें स्वानुभव द्वारा एंव रचनात्मक कार्यो द्वारा ज्ञान प्रदान करने पर बल दिया। इसलिए वर्तमान परिस्थिति में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक उपागम आधारित विचारों का अध्ययन एक अत्यावश्यक चिन्तन बन गया।

योगदानः स्वामी जी इस युग में भारतीय धर्म एवं दर्शन के उद्घोषक के रूप में अवर्तीण हुए थे। उन्होनें देश–विदेश में वेद्धान्त का प्रचार किया। उनकी सबसे बड़ी विशेषता वेद्धान्त को व्यवहारिक रूप देने में है। उनका स्पष्टीकरण है कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य है पर आत्मानुभूति इस शरीर द्वारा ही सम्भंव है।

एक महान संत की भाँति स्वामी जी जहाँ एक और वसुधैव कुटुम्बंकम के भाव का प्रचार करते है, वहाँ दूसरी और वे राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए शक्ति के निर्माण तथा उसके संचय पर भी बल देते हैं। उन्होनें बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यावसायिक तथा आध्यात्मिक विकास पर ही बल नहीं दिया अपितु स्त्री शिक्षा, जनसमुदाय शिक्षा तथा धार्मिक शिक्षा आदि अनेक पक्षों की विस्तृत व्याख्या करते हुए मानव के चारित्रिक विकास पर बल दिया। स्वामी जी के शिक्षा–दर्शन पर विहगंम दृष्टिपात करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि वे हृदय से आदर्शवादी थे।

5.2) रविन्द्र नाथ टैगोर

टैगोर ने शिक्षा उपागमों की खोज अपने अनुभव से है। 'विश्वभारती' के संस्थापक के रूप में वे एक व्यावहारिक शिक्षा–शास्त्री होने का परिचय देते हैं। उनके अनुसार ''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और समस्त सृष्टि के बीच समरसता स्थापित करती है।'' टैगोर जी ने शिक्षा लक्ष्यों एंव प्रक्रीया को बालक तक पहुचाँने तथा उस तक लाने के लिए, स्पष्ट समझ उन्पन्न करने हेतु निम्न शैक्षिणिक विधियाँ का चयन किया हैः–

1. **स्वानुभव द्वारा शिक्षणः** उनका विश्वास था कि शिक्षा को जीवन से सम्बन्धित करने पर बालकों के अपने अनुभवों का महत्व बढ़ जाता है, शिक्षा की कृत्रिमता समाप्त हो जाती है और बालक स्वानुभव से सीखते हैं।
2. **क्रिया द्वारा शिक्षणः** उन्होनें अपनी संस्था में दस्तकारी का सीखना अनिवार्य कर दिया था। उनका विचार था इन क्रियाओं से उपागम गतिहीन न होकर गतिशील हो जाता है।
3. **भ्रमण द्वारा शिक्षणः** वे कक्षा–शिक्षण को कृत्रिम एंव निरर्थक समझते थे। खेलते–कूदते, घूमते–चलते, बात–करते, कार्य करते हुए भी कुछ प्रक्रियाओं से शिक्षा छात्रों को प्रदान की जा सकती है। अतः भ्रमण के समय पढ़ाना शिक्षण की सर्वोतम विधि है।
4. **खेल द्वारा शिक्षणः** टैगोर का कहना है कि खेल का मैदान ऐसा स्थान है जहाँ पर विभिन्न प्रकार के बालकों को विभिन्न तरीकों से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। क्योंकि खेल में बालकों की रूचि होती है, उन्हें स्वतन्त्रता मिलती है एवं उन्हें आनन्द आता है।
5. **प्रश्नोत्तर एंव वाद–विवाद विधि द्वारा**
6. **मातृभाषा द्वारा शिक्षणः** टैगोर बालक तक आसानी से व स्पष्ट रूप से शिक्षा प्रदान करने का सबसे उपयुक्त माध्यम मातृ–भाषा को समझते थे। वे कहते थे कि मातृभाषा ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति। बालक तक अपनी बात आसानी से पहुँचायी जा सकती है।

अतः टैगोर का मानना है कि शिक्षा देने तथा शिक्षा ग्रहण करने, दोनों के लिए इच्छाशक्ति और जिज्ञासा की प्रकृति का होना तथा इन शिक्षण विधियों का उचित प्रयोग करना प्रधान है।

योगदानः– टैगोर एक बहुमुखी प्रतीभा थे। वे एक महान साहित्यकार, कवि, दार्शनिक, समाजसुधारक एंव शिक्षा–शास्त्री थे। उन्होने व्यक्ति समाज तथा विश्व के पुनरूत्थान एंव कल्याण के लिए शिक्षा की कल्पना की। इसके लिए उन्होने शिक्षा प्रणाली में सुधार किया और अपने विचारों की स्थापना की जो आज 'विश्वभारती' के नाम से प्रसिद्ध है, जो संसार की संस्कृतियों एंव सभ्यताओं के अध्ययन का केन्द्र है और अनतर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास का प्रमुख साधन है। इस प्रकार उन्होनें भारत के प्राचीन शिक्षात्मक गौरव को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्थान दिया। इस पद्धति से उन्होनें शिक्षा में सौनदर्यानुभूति पर बल दिया और पाठ्यक्रम में इसकी व्यवस्था की।

अनुशासन स्थापन के लिए टैगोर दण्ड देने के पक्ष में न थे। बाल अपराध को रोकने के लिए उन्होनें हमें 'स्वतन्त्रता की चिकित्सा' का विचार दिया जो आज भी उपयुक्त है। टैगोर अशिक्षा को देश की गरीबी का तथा कष्टों का मुख्य कारण मानते थें। अतः मनुष्यों का दुःख दूर करने के लिए उन्होनें जन–साधारण की शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया।उन्होनें स्त्री शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा एंव प्रोढ़ो की शिक्षा पर भी अधिक बल दिया। अतः टैगोर ने जन कल्याण, स्वशासन, आदि सुन्दर विचारों को शिक्षा से सम्बद्ध किया।

वर्तमान शिक्षा के हेतु आज इन सभी विचारों को स्वीकार किया जा रहा है।

शोध का निष्कर्ष

आज शिक्षा एक व्यवसाय बन गई है जिसका मुख्य उद्देश्य धनोपार्जन हो गया है विद्यार्थी समुदाय अपने रास्ते से भटक रहा है जबकि भारत के शिक्षा–शास्त्रियों ने शिक्षा का जीवन से घनिष्टि सम्बन्ध बताया है और बालक के जीवन के समस्त अंगो एंव पक्षो का इस रूप में विकास करना है कि 'सम्पूर्णता' की प्राप्ति हो सके। इनके दार्शनिक व शैक्षिक विचार न केवल भारतीय अन्तरात्मा का प्रधिनिधित्व करते हैं बल्कि मानवीय मूल्यों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था करके वर्तमान युग की चेतना का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। यदि इन मुल्यों को पहचान कर अमल किया जाए (जैसे बाल केन्द्रित शिक्षोंको अतयाधिक महत्व, शिक्षा में प्रकृतिवादी विचारधारा को यथोचित स्थान देना, सिद्धान्तों व व्यवहारों दोनों रूपों में शिक्षा प्रणाली का प्रजातान्त्रिक बनाना, हृदय, हाथ एंव मस्तिष्क तीनों को समुचित रूप से विकसित होने का अवसर देना, राष्ट्रभाषा एंव मातृ भाषा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करना) तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आश्चर्यजनिक परिवर्तन सामने आयेगें।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. भावी शोधकर्ता द्धारा ''पाश्चात्य एंव भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिणिक–विधियों का अध्ययन'' पर शोध कार्य किया जा सकता है।
2. भारत के शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक उपागमों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्व का अध्ययन पर भावी शोध कार्य किया जा सकता है।

अतः भारत के शिक्षा–शास्त्रियों के शैक्षिक उपागम का भारतीय शिक्षा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आवश्यकता इस बात की उक्त बिन्दओं पर गहनता एंव गभ्भीरता से चिन्तन किया जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. कपिल एच. के. : अनुसन्धान विधियाँ कचहरी घात आगरा
2. सुखिया, एस.पी. मेहरोत्रा : शैक्षिक अनुसन्धान के मुल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
3. सिंह, परमेश्वर प्रसाद : भारत के महान शिक्षा शास्त्री (1997) सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली।
4. अग्रवाल, एस. के. : शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त
5. टैगोर, रविन्द्रनाथ : गीताजली (1968) सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
6. लाल, रमन बिहारी : शिक्षा सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड़, मेरठ।
7. कुमार, सुशील : युग पुरूष विवेकानन्द
8. मुखर्जी, एम. एन. : वर्तमान भारत में शिक्षा, रोपड़ा रोडं, बडोदा
9. मित्तल, डी. के. : शिक्षा सिद्धान्त, लायल बुक डिपो, मेरठ
10. डॉ. पाण्डेय, रामशक्त : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा (1999)
11. डॉ. बधेला, हेत सिंह : शिक्षा सिद्धान्त व आधुनिक भारत में शिक्षा(1993)
12. बुच, एम. बी. : फिफथ सर्व ऑफ एजूकेशन रिसर्च, बोल्यूम।

पत्र एंव पत्रिकांए

1. 21 वीं सदी में शिक्षा : योजना (सितम्बर–2002)
2. लेस्ट बी. फॉरगेट : विश्व भारती बुलेटिन (सिल्बर जुबली, नवम्बर)
3. सुनिल चन्द्र सरकार : टैगोर एजूकेशन फिलॉसफी एण्ड एक्सपेरीमेण्ट, विश्व भारती (1961)
4. शिक्षा एंव समाजिक अनुशासन : क्रो निकल पब्लिकेशन निबन्ध प्रा0 लि0, नई दिल्ली।